दैनिक जागरण
नई राहें
मंगलवार, 05 जून2012

EXTRA SHOT

छोटे काम बड़ी कमाई

कम पढ़े-लिखे हैं, पर अच्छी कमाई वाला करियर अपनाना चाहते हैं, तो बिल्डिंग सुपरवाइजर, प्लंबर, इलेक्ट्रिशियन, कारपेंटर जैसे छोटे-छोटे कामों की शॉर्ट-टर्म ट्रेनिंग लेकर बड़ी कमाई कर सकते हैं। कैसे? जानकारी दे रहे हैं अरुण श्रीवास्तव...

रायपुर के रामनिवास ने किसी तरह बारहवीं तक की पढ़ाई की थी। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण वह आगे की पढ़ाई नहीं कर सका। उसके माता-पिता कपड़े मोहल्ले के लोगों के कपड़े प्रेस करके गुजारा करते थे। पढ़ाई छूटने के बाद रामनिवास भी पूरी तरह उसी काम में जुट गया, लेकिन घर में कई छोटे भाई-बहन होने के कारण परिवार का खर्च बमुश्किल ही चल पाता था। इससे वह परेशान रहता था और कुछ ऐसा करना चाहता था, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति बेहतर हो सके। इसके लिए उसे दूसरे शहर जाने से भी परहेज नहीं था। इसी बीच उसने सरकारी सहायता प्राप्त ऐसे संस्थानों के बारे में पढ़ा, जहां से तीन महीने की तकनीकी ट्रेनिंग लेकर कमाई वाले काम पाए जा सकते थे। इन संस्थानों से संपर्क करने पर पता चला उनमें आज के जमाने की मांग के हिसाब से 30 से ज्यादा कोर्स संचालित किए जाते हैं। इन संस्थानों का मुख्य उद्देश्य आर्थिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों से संबंधित युवाओं के लिए स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम चलाना है। यही कारण है कि इन कोर्सों की फीस निजी संस्थानों की तुलना में नाममात्र को है। चूंकि रामनिवास की पहले से ही थोड़ी रुचि प्लंबिंग में थी, इसलिए उसने ट्रेनिंग के लिए यही कोर्स चुना। तीन महीने की सफल ट्रेनिंग के बाद आज वह दिल्ली के द्वारका इलाके में काम कर रहा है। उसने करीब चार रेजीडेंशियल सोसायटीज में प्लंबिंग का काम संभाल रखा है, जहां प्रति सोसायटी उसे तीन हजार रुपये महीने मिलते हैं। इसके अलावा किसी फ्लैट में निजी कार्य कराने अथवा बाहर काम मिलने पर उसे अतिरिक्त आमदनी हो जाती है। अच्छी तरह ट्रेंड होने के कारण लोग उससे काम कराने को प्राथमिकता देते हैं। वह दिल्ली में अपने रहने-खाने के खर्च के अलावा अपने घर भी पैसे भेजने में समर्थ है और आज उसका परिवार खुश है।

कमाई की तकनीक

अगर कोई युवा कमजोर आर्थिक स्थिति या किसी अन्य वजह से दसवीं-बारहवीं से अधिक नहीं पढ़ पाता या ज्यादा पढ़ाई के बावजूद कोई काम नहीं मिल पाता, तो बेहतर होगा कि आज के समय की मांग के मुताबिक कोई तकनीकी प्रशिक्षण हासिल कर ले। इस तरह के कार्यक्रमों में सबसे ज्यादा डिमांडिंग हैं - प्लंबिंग, इलेक्ट्रिशियन, कारपेंटर, क्रेन ऑपरेटर, बैकहो लोडर, बिल्डिंग सुपरवाइजर, स्टोर कीपर, पेंटर, लैंड सर्वेयर, सेफ्टी इंस्पेक्टर, लैब टेक्निशियन, साइट एकाउंटेंट, कैटरिंग, बेकरी आदि। इस तरह के स्किल्ड लोगों की जरूरत महानगरों, शहरों, निर्माण स्थलों, रेजिडेंशियल इलाकों में सबसे ज्यादा है।

संस्थान हैं कई

इन दिनों केंद्र और राज्य सरकार की मदद से चलाये जा रहे ऐसे कई संस्थान हैं, जो जरूरतमंद युवाओं के लिए उपयोगी प्रोग्राम चला रहे हैं। इनमें से कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री डेवलपमेंट काउंसिल यानी सीआईडीसी (www.cidc.in) प्रमुख है। यह योजना आयोग, भारत सरकार और इंडियन कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री द्वारा संचालित संयुक्त उद्यम है। सीआईडीसी में डिप्टी डायरेक्टर दीपक मजूमदार का कहना है कि हमारे यहां ऐसे करीब 50 तरह के कोर्स संचालित किए जाते हैं। ये आज के जमाने के जॉब-ओरिएंटेड वोकेशनल कोर्स हैं। इनमें से अधिकांश की अवधि तीन महीने है यानी मात्र तीन माह की ट्रेनिंग के बाद ही युवा रोजगार के लिए प्रशिक्षित कर दिए जाते हैं। कोर्स के तहत बीस प्रतिशत क्लासरूम और 80 प्रतिशत प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दी जाती है। प्रोग्रेस देखने के लिए हर सप्ताह टेस्ट लिए जाते हैं। प्रैक्टिकल ट्रेनिंग पर ज्यादा जोर होने के कारण युवाओं को काम पाने में आसानी होती है। खास बात यह है कि सीआईडीसी कई राज्यों के साथ अनुबंध करके वहां के युवाओं को कमाने में समर्थ बना रही है। संस्थान उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ के अलावा पूर्वोत्तर के राज्यों में प्रशिक्षण देकर युवाओं को रोजगार के लायक बना रहा है। यहां से प्रशिक्षित युवा दस से पंद्रह हजार रुपये महीने की नौकरी कर रहे हैं। संस्थान युवाओं को ट्रेनिंग देने के लिए देशभर में खुद करीब 28 सेंटर चला रहा है।

और भी हैं राहें

देश की राजधानी दिल्ली में राज्य सरकार की संस्था सोसायटी फॉर सेल्फ एम्प्लॉयमेंट द्वारा भी पिछले कुछ वर्षों से एंटरप्रेन्योर स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम के तहत इस तरह के दो दर्जन से अधिक कोर्स संचालित किए जा रहे हैं। इसके लिए तकनीकी ट्रेनिंग मिटकॉन कंसलटेंसी (www.mitcontraining.com) के विशेषज्ञों द्वारा प्रदान की जाती है। इसके द्वारा संचालित कोर्सों की अवधि एक माह से लेकर छह माह तक है।

कम खर्च, पक्की जानकारी

आज देश की विशाल आबादी और भयानक बेरोजगारी के दौर में एक तरफ जहां निजी संस्थान युवाओं को ट्रेनिंग देने के नाम पर अंधाधुंध कमाई कर रहे हैं, वहीं केंद्र और राज्यों के प्रोत्साहन से चल रही इस तरह की संस्थाएं जरूरतमंद युवाओं के लिए वरदान साबित हो रही हैं। इन संस्थानों में बेहद कम फीस पर ट्रेनिंग दी जाती है, जिससे कमजोर आयवर्ग से आने वाले युवा इनमें आसानी से एडमिशन हासिल करके तकनीकी रूप से योग्य बन सकते हैं। इन संस्थानों की उपयोगिता को देखते हुए सरकारों को ऐसे और संस्थान या फिर इनकी ज्यादा से ज्यादा शाखाएं खोलने की पहल करनी चाहिए, जिससे कि देश के युवा गलत रास्ते पर जाने की बजाय राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया से जुड़ सकें। ऐसा होने पर वह और उनका परिवार भी खुशहाली हो सकेगा।

बढ़ाएं कदम

बेरोजगार युवाओं को इस तरह के संस्थानों की तलाश करके उनसे जुड़ने का उपक्रम करना चाहिए। वहां से तकनीकी योग्यता हासिल कर वे अच्छी नौकरी भी हासिल कर सकते हैं या फिर खुद का काम आरंभ कर सकते हैं।

सिटी बैंक रखेगा 2000 एम्प्लॉई

वैश्विक मंदी की दस्तक के चलते कई कंपनियों ने अपनी रिक्रूटमेंट योजनाओं को ठंडे बस्ते में डाल दिया है या फिर कंपनी के आकार को छोटा करने में लग गई है। ऐसे माहौल में ही सिटी बैंक ने 2000 से भी ज्यादा लोगों को भारत में इस वर्ष 2012 में रखने की योजना तैयार की है। ये भर्ती पूरे देश में विभिन्न जगहों के कार्यालयों के विभिन्न सेग्मेंट में होगी। अच्छी बात यह भी है कि इनमें बहुत सी जॉब फ्रेश ग्रेजुएट्स के लिए होंगी। सिटी बैंक इंडिया के ग्लोबल कंज्यूमर ग्रुप के कंट्री बिजनेस मैनेजर आनंद सेल्वाकेसरी कहते हैं, यद्यपि भारतीय अर्थव्यवस्था पर इस वक्त थोड़ा संकट है, लेकिन इसकी बुनियाद मजबूत है। सिटी बैंक के लिए भारत 'की मार्केट' है। इसलिए हम इस साल भर्तियां चालू रखेंगे। इस साल में हम उम्मीद कर रहे है कि 2000 से ज्यादा प्रोफेशनल्स को हम बैंक से जोड़ेंगे।

वह कहते है कि सिटी बैंक बिजनेस स्कूलों में भी जाएगा और वहां से फ्रेश मैनेजमेंट ट्रेनीज की तलाश करेगा और उन्हें समर इंटर्न्स कराएगा, वहीं वह कॉलेज जाकर फ्रेश ग्रेजुएट्स भी हायर करेगा। सेल्वाकेसरी कहते हैं- पहली बार हमने पिछले साल ग्रेजुएट एनालिस्ट प्रोग्राम का संचालन किया, जिसके तहत कॉलेजों और आईआईटीज में जाकर करीब 19 ग्रेजुएट्स को चुना था। इस साल भी हम इस एक्सरसाइज को जारी रखेंगे। बैंक ने एक 'यूनिवर्सल बैंकर्स' की टीम बनाने का भी फैसला किया है, जो उच्च शिक्षा प्राप्त एग्जीक्यूटिव्स की टीम होगी और वह नए कस्टमरों को बैंक से जोड़ने की जिम्मेदारी लेगी।

ई-बे रखेगा 1000 का स्टाफ

ऑनलाइन रिटेलर कंपनी ई-बे बेंगलूर में एक नया डेवलपमेंट सेंटर स्थापित करने की योजना बना रही है, जिसके लिए वह करीब एक हजार एंप्लॉइज को अगले तीन सालों के भीतर कंपनी में जगह देगी। ई-बे ने एक स्टेटमेंट में कहा कि नई सुविधा से हमारे तमाम केंद्रों पर तकनीकी गुणवत्ता में वृद्धि होगी। यह सेंटर ई-बे इंक की भारत में उपस्थिति को और भी प्रभावी बनाएगी, जिसमें चेन्नई में 2200 एम्प्लॉई वाला ग्लोबल डेवलपमेंट सेंटर और मुंबई की बिजनेस यूनिट भी शामिल होगा।

2002 में ई-बे द्वारा अधिगृहीत ग्लोबल ई-कॉमर्स बिजनेस 'पे पाल' बेंगलूर के सॉफ्टवेयर टैलेंट पूल में गोता लगाने की तैयारी कर रही है। पे पाल के जनरल मैनेजर अनुपम पाहुजा कहते हैं, हम बेंगलूर के सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग टैलेंट्स के बड़े पूल से टैलेंट निकालना चाहते हैं, ताकि उनके साथ हम कॉमर्स का भविष्य बना सकें।

सेव करें या डिलीट?

ऑफिशियल एड्रेस पर आए जंक मेल या जंक पेपर आदि कुछ ऐसे कागजात होते हैं, जिन्हें डिलिट करते या फेंकते वक्त हमें सोचना पड़ता है कि इसे सेव करें या डिलिट करें या फिर फेंक दें? किस आधार पर काम के और बेकार के कागजात में करें अंतर...

ऑफिस पहुंचते ही हम सबसे पहले अपने कम्प्यूटर खोलते हैं। हम काम के एक निश्चित घंटे में न केवल ऑफिशियल ई-एड्रेस पर पड़े मेल को चेक करते हैं, बल्कि हार्ड एड्रेस (ऑफिस का पता) पर आए हुए कागजात को चेक भी करते हैं। इनमें से कुछ कागजात गैरजरूरी भी होते हैं। कभी-कभी ऐसे जंक मेल या जंक कागजात आपके लिए सिरदर्द भी साबित हो सकते हैं। दरअसल, ये ऐसे सॉफ्ट या हार्ड कंटेंट होते हैं, जिन्हें आप न सेव करना चाहते हैं और न ही डिलिट! क्योंकि यदि आप उसे फेंकना चाहते हैं, तो आपके मन में यह बात उठ सकती है कि कहीं बाद में यह ऑफिस के लिए जरूरी न साबित हो जाए! दूसरी ओर, यदि आप उसे सेव करना चाहते हैं, तो आप यह भी सोच सकते हैं कि इसे बेकार में रख लिया। इसकी ऑफिस में कोई जरूरत तो है नहीं! यदि आपके सामने भी ऐसी असमंजस की स्थिति आती है, तो कुछ उपाय अपनाकर आप पा सकते हैं इनसे छुटकारा।

एड्रेस की जांच-परख

अक्सर ऑफिस में आपके हाथ में कुछ ऐसे पत्र आ जाते हैं, जिन पर सही-सही पता नहीं लिखा होता। यह भी संभव है कि आपके ऑफिस के पते से मिलते-जुलते एड्रेस वाले लिफाफे आपके पास आ जाएं। इससे मुक्ति पाने का सबसे सरल उपाय यही है कि आप एक बार उसे सरसरी निगाह से देखकर डस्टबिन के हवाले कर दें। ठीक उसी प्रकार, ऐसे मेल को भी तुरंत डिलिट कर दें, जिनकी ई-मेल आईडी सही न लिखी हो।

मेल फोल्डर बनाएं

अक्सर आप जब अपना ऑफिशियल मेल चेक करते हैं, तो आपको ऐसे कई 'बल्क' मेल्स मिल जाते हैं, जो किसी कंपनी के विज्ञापन या लॉन्चिंग से संबंधित होते हैं। यदि आप कॉरपोरेट यानी व्यवसाय करने वाली कंपनी के साथ काम कर रहे हैं, तो इन मेल्स को डिलिट न करें। आप इन्हें सुरक्षित रखने के लिए अपने सिस्टम (कम्प्यूटर) पर अलग-अलग नामों से फोल्डर क्रिएट कर लें और उसमें इन मेल्स को सेव कर दें। संभव है कि आपकी कंपनी को अपना प्रोडक्ट बेचने में इस मेल से जरूरी जानकारी मिल जाए। यही प्रक्रिया आप ऑफिस के पते पर आए पत्रों के साथ भी दोहरा सकते हैं।

निश्चित समय पर करें जांच

ऐसा अक्सर होता है कि एक ओर हम ऑफिस के जरूरी काम को निबटाते रहते हैं, तो बीच-बीच में मेल या पत्रों की जांच भी करते रहते हैं। एक साथ दोनों कामों को अंजाम तक पहुंचाने की कोशिश में जुटे रहते हैं। वास्तव में इससे हमारे काम पर नकारात्मक असर पड़ता है। बेहतर होगा कि हम अपनी 7-8 घंटे की ड्यूटी में एक समय निश्चित कर लें, जिसमें हम अपने मेल या पत्रों को चेक करें। वह समय ऑफिस का फर्स्ट ऑवर या लंच ऑवर के बाद भी हो सकता है, क्योंकि इन्हीं दोनों समय वर्क लोड कम होता है।

अलग-अलग श्रेणियों में बांटें

यदि आप अपनी टेबल पर कागजातों की भीड़ नहीं बढ़ाना चाहते, तो पत्रों को श्रेणियों में बांट दें। ये श्रेणियां इस प्रकार हो सकती हैं :

ऐक्शन पेपर : ऐसे पत्र, जिन पर तुरंत कार्रवाई जरूरी हो ।

इन्फॉर्मेशन पेपर : ऐसे पत्र, जिनकी सूचनाएं भविष्य में ऑफिस के काम आएं।

रद्दी पेपर : ऐसे पत्र, जो न वर्तमान में काम आएं और न ही भविष्य में। ऐसे पत्रों को तुरंत कूड़ेदान के हवाले कर दें।

यही प्रक्रिया आप अपने मेल के लिए भी अपना सकते हैं यानी बेकार मेल को तुरंत डिलिट कर दें।

स्मिता

कामयाबी का ताज

सफलता का ताज उन्हें ही मिलता है, जो किसी भी नए काम को कर गुजरने का साहसिक निर्णय लेते हैं और उसके अनुरूप आगे कदम बढ़ाते हैं...

वान्य मिश्रा ने हाल में 2012 का फेमिना मिस इंडिया का खिताब जीता। सेलेक्शन प्रॉसेस के दौरान उन्होंने काफी बढ़िया प्रदर्शन किया। उनके खिताब जीतने पर क्या यह मतलब निकाला जाए कि वान्या के अलावा, देश में दूसरी कोई सुंदर लड़की नहीं है? तो इसका उत्तर हमेशा ना में ही होगा। कई लड़कियां हैं, जो उनकी अपेक्षा अधिक सुंदर और प्रतिभाशाली हैं। दरअसल, वान्य के पास कई ऐसे गुण, जैसे-साहसिक निर्णय लेने का माद्दा, आत्मविश्वास आदि हैं, जिनकी वजह से वे दूसरों को पछाड़कर खिताब जीत पाईं। अगर वे ब्यूटी कॉन्टेस्ट में भाग लेने का साहसिक निर्णय नहीं ले पातीं, तो सफलता का स्वाद उन्हें कभी भी चखने को नहीं मिलता। अगर दूसरे लोग भी चाहें, तो वान्य की तरह अपने-अपने क्षेत्र में सफलता हासिल कर सकते हैं।

साहसिक निर्णय

ब्यूटी कॉन्टैस्ट हो या स्पोर्ट्स सीरीज या फिर अपने जॉब में सफलता प्राप्त करनी हो, इन सभी के लिए सबसे पहले हमें साहसी बनना होगा। अगर दिमाग में कई सारे आइडियाज हैं, तो उसे बॉस के सामने प्रस्तुत करने का साहस दिखाना होगा। संभव है कि कई आइडियाज रिजेक्ट हो जाएं, तो कई प्रोजेक्ट्स पर काम करने का निर्देश भी मिल सकता है। अगर हम असफल होने के डर से हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें और किसी प्रकार का निर्णय न ले पाएं, तो यह गलत है। अगर सफलता हासिल करनी है, तो काम को शुरू करने का साहस करना ही होगा।

पार्टिसिपेट करें

कई बार हमें किसी खास ऑफिशियल वर्क में पार्टिसिपेट करने की इच्छा होती है। लेकिन हम असफल होने के डर से अपने कदम पीछे खींच लेते हैं। इससे लोगों के बीच हमारी योग्यता की पहचान नहीं हो पाती है। बॉस या सीनियर्स भी हमें अंडरएस्टिमेट करने लग जाते हैं। दरअसल, हमारे दिमाग में हमेशा यह बात चलती रहती है कि हमारे साथी हमसे बेहतर आइडिया सोचते हैं। किसी भी काम को वे बेहतर तरीके से कर पाते हैं। हमारी ऐसी धारणा सही नहीं होती है। हर व्यक्ति बढ़िया सोच सकता है और काम कर सकता है। क्योंकि अलग-अलग लोगों के पास अपनी अलग-अलग खूबी होती है। इसलिए किसी भी काम को हाथ में लेने से डरने की बजाय उसमें पार्टिसिपेट करना चाहिए।

करें पहल

सफलता पाने के लिए लक्ष्य का निर्धारण बेहद जरूरी है। आगे बढ़ने के लिए हमें उस क्षेत्र में पहल भी करनी चाहिए। अगर हमारे पास कोई आइडिया है, तो उस पर काम करने की पहल जरूर करनी चाहिए। हम तभी कामयाब होंगे, जब हमारा काम दूसरों से अलग होगा। यह सच है कि हमारे चारों ओर अवसर बिखरे पड़े है। जरूरत है, तो बस उसे पहचान कर सही क्षेत्र में पहल करने की।

(ब्रिटिश लिंगुआ के डायरेक्टर डॉ. बीरबल झा की किताब *सेलिब्रेट योर लाइफ* से साभार)

Syndicate Bank
BGL
12X8 B/W
A.E.

Syndicate Bank
BGL
12X8 B/W
A.E.

Syndicate Bank BGL
12X8 B/W
A.E.